श्रीव्यंक्टेश तिरुपति बालाजी

व्यंक्टेश बालाजी मंदिर के नाम से प्रसिद्ध **श्रीव्यंक्टेश तिरुपति बालाजी** है। पुजारी श्री श्याम सुन्दर चतुर्वेदी जी के कथानुसार जो पॉचवी पीढी में पूजन कर रहे है:—तत्कालीन माधधजी शिंधिया जी के मित्र मुन्नशी लाल प्रयाग जी ने मंदिर का निर्माण 1776 में करवाया था मंदिर का निर्माण 22 साल में पूर्ण हो गया था। भगवान के स्वरूप का वर्णन बीच में भगवान तिरूपति बालाजी है वाय तरफ लक्ष्मी माता है एवं दायीं तरफ पृथ्वी माता है। मंदिर का छत बिना किसी सर्पोट का वना हुआ है भगवान को स्टटे के समय में गार्ड ऑफ आनर दिया जाता था मंदिर परिसर में अनेक मंदिर है उनमें से एक मंदिर हनुमान जी का है जो आराध्य की सेवा में हाथ जोड़े बैठे है और उनके पीछे गरूण देव है,एवं एक कुआ भी है जो अष्टकोणिएँ बना हुआ है।जिसका निर्माण मंदिर निर्माण से पहले का है।भक्तों की यहॉ सताधिक संख्या आती है, और बालाजी सरकार सबकी मनोकामना पूर्ण करते है।

पता:—किला अंदर कार्तिक चौक विदिशा।

श्री चिंतामणि गणेश मंदिर

पुजारी जी श्री अश्विनी कुमार चतुर्वेदी जी के कथानुसार जो तीसरी पीढ़ी में विगत 48 वर्ष से श्री गणेश जी कि सेवा में समर्पित हैं।श्री चिंतामणि गणेश मंदिर न केवल अत्यंत प्राचीन है बल्कि सुप्रसिद्ध और हजारों भक्तों की आस्था का केंद्र भी है। इस मंदिर की स्थापना देवराज इन्द्र के द्वारा की गयी है। श्री गणेश पुराण में उल्लेख है कि महर्षि गौतम की धर्मपत्नी अहिल्या का छल से सतित्व भंग करने के अपराध के लिए जब महर्षि गौतम ने देवराज इन्द्र को श्राप दिया तो इन्द्र बहुत व्याकुल हो गये तीनो लोकों में इन्द्र की रक्षा करने का साहस ब्रम्हा विष्णु महेश ने भी नहीं किया। तब आकाशवाणी हुई हे इन्द्र यदि तुम महर्षि गौतम के श्राप से उन्मुक्त होना चाहते हो तो भारत वर्ष के मध्य में भगवान् श्री गणेश के सिद्धि विनायक स्वरूप की प्रतिमा स्थापित कर विधि विधान से पूजन और पताः— आराधना करोगे तब ही श्राप से मुक्ति होगी और इन्द्र पद को पनः प्राप्त कर सकोगे। यह सर्व विदित है भारत वर्ष के मध्य में मध्यप्रदेश है। और इस मध्यप्रदेश के मध्य में श्री चिंतामणि गणेश जी विराजमान है। पूर्व काल में यहाँ एक विशाल सरोवर था जिसका कुछ भाग आज भी नीमताल के नाम से प्रसिद्ध है। देवराज इन्द्र ने उस सरोवर में एक चट्टान पर सिद्धि विनायक श्री गणेश जी की प्रतिमा निर्मित की विधि विधान से प्राण प्रतिष्ठा कर श्री गणेश जी की पूजन और आराधना की।जिसके बाद इन्द्र न केवल श्राप मुक्त हुए बल्कि उन्हें पुनः देवताओं के राजा का पद प्राप्त हुआ। श्री चिंतामणि गणेश मंदिर के पुजारी बताते है कि हिन्दुस्तान के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में सम्मिलित होने के लिए जब पेशवाओं कि फौजें महाराष्ट्र से झाँसी की ओर रवाना हुई तो विदिशा में बेतवा नदी के किनारे फौज ने कुछ दिनों के लिए डेरा डाला था। पेशवाओं के आराध्य देव श्री गणेश हैं कहा जाता है कि नाना साहब पेशवा भोजन करने के पूर्व श्री गणेश जी का पूजन करने इस मंदिर में प्रतिदिन आते थे। बेतवा किनारे जिस स्थान पर नाना साहब की फौज ने डेरा डाला था वह विदिशा के इतिहास में नाना के बाग के नाम से प्रसिद्धि है।चूँकि नाना साहब बाग से गणेश मंदिर तक प्रतिदिन आते इसलिए इस मार्ग को नाना साहब पेशवा पथ के रूप में प्रसिद्धि मिलि,पुराण कालीन श्री गणेश मंदिर का जीर्णोद्धार नाना साहब पेशवा ने ही कराया था।लेकन जब मंदिर जीर्णशीर्ण हो गया तो उसका नवनिर्माण पंडित मूलचंद्र जी ने करवाया और उन्होंने पूर्ण भक्ति भाव से गणेश जी कि आराधना की।और यह मंदिर कुछ ही समय में जिला एवं प्रदेश कि सीमाओं को लांघकर वर्तमान में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनगिनत श्रद्धालुओं की आस्था का केन्द्र बना हुआ है।इस मंदिर से अनेक चमत्कारिक घटनाएं जुड़ी हुई है। लगभग 60 वर्ष तक पुजारी के रूप में श्री पंडित मूलचंद्र जी चतुर्वेदी ने श्री गणेश जी की सेवा कि,उसके बाद उनके पुत्र पंडित मदनमोहन चतुर्वेदी ने लगभग 65 वर्ष तक श्री गणेश की सेवा की,वर्तमान में तीसरी पीढ़ी के पंडित के पंडित अश्विनी कुमार चतुर्वेदी विगत 48 वर्षों से श्री गणेश जी कि सेवा में समर्पित हैं।